१०. मेरे जेबकतरे के नाम

– हरिशंकर परसाई

परिचय

जन्म : १९२१, होशंगाबाद (म.प्र.)
मृत्यु: १९९५, जबलपुर (म.प्र.)
परिचय : हिंदी के मूर्धन्य आधुनिक व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का हिंदी साहित्य में व्यंग्य रचना को प्रतिष्ठित कराने में मौलिक योगदान रहा है । आपने भारतीय समाज के अंतर्विरोधों, विसंगतियों, भ्रष्टाचार, पाखंड तथा शोषण को व्यंग्य द्वारा बड़ी कुशलता से उद्घाटित किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'हँसते हैं-रोते हैं', 'जैसे उनके दिन फिरे', 'दो नाकवाले लोग', 'सदाचार का ताबीज', 'विकलांग श्रद्धा का दौर' आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य पत्र में हरिशंकर जी ने जेबकतरे द्वारा उनके जेब काटने के प्रसंग को बड़े ही मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

मौलिक सृजन

'यातायात की इलेक्ट्रॉनिक सिग्नल सिस्टिम बंद हो जाए तो' विषय पर अपने विचार लिखो ।

प्यारे भाई,

तूने भोपाल स्टेशन पर रेल के डिब्बे के भीतर दस आदमियों के बीच मेरा जेब काट लिया था । आशा है, तू मुझे भूला नहीं होगा । जेब में १७५ रुपये थे । गिन लेना । अगर पाँच-दस कम हों तो अगली बार मैं पूरे कर दूँगा । मैं यह नहीं चाहता कि मेरे मन में तो यह रहे कि १७५ रुपये गए और तेरे हाथ सिर्फ १७० रुपये पड़े । यह पैसे की बात नहीं है । दस-पाँच इधर-उधर हुए तो क्या फर्क पड़ता है । बात भावना की है । भावनात्मक बेईमानी मैंने कभी नहीं की ।

दोस्त, तूने मेरा बड़ा उपकार किया । चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद तो मानव देह मिलती है । मनुष्य का जीवन सिर्फ एक बार मिलता है और जेब काटने का गौरव सिर्फ मनुष्य को विधाता ने दिया है । कोई कुत्ते का जेब नहीं काटता मगर वह आदमी भी कितना अभागा है, जिसका एक बार भी जेब न कटे । ऐसी बेमानी जिंदगी जी जाए कि उसपर जेबकट का भी ध्यान न जाए । मैं आत्मग्लानि से पीड़ित था । उम्र बढ़ रही है, न जाने कब कूच का डंका बज जाए । बिना जेब कटे उस लोक में किस मुँह से जाऊँगा ? प्यारे, मैं तो खुद जेबकट की तलाश में था । तूने उतनी परेशानी फालतू उठाई । तू मुझसे कह देता कि मैं जेबकट हूँ, तो मैं खुद ही कहता-मैं तेरा कब से इंतजार कर रहा हूँ । ले, मेहरबानी करके मेरा जेब काट ले । मेरा जीवन सार्थक कर ।

दोस्त, वर्तमान सभ्यता जेबकटी की सभ्यता है । हर आदमी दूसरे की जेब काट रहा है । इस सभ्यता में अपना जेब बचाने का तरीका यह है कि दूसरे की जेब काटो । सिर्फ उसकी जेब सुरक्षित है, जो दूसरे के जेब पर नजर रखता है । मेरा जेब इसलिए कटा कि मैं अपने जेब पर ही ध्यान दे रहा था । अगर मैं पास की बर्थ के सेठ के जेब पर ध्यान देता तो मेरा जेब कभी नहीं कटता ।

दोस्त, तेरा-मेरा धंधा एक है । मैं भी जेबकट हूँ । मैं लोगों के जेब में रखे अनुभव निकालकर लिखता हूँ । अनुभवों से भरे कई जेब मैंने काटे हैं । तूने मुझ जेबकतरे का जेब काट लिया । विचार की बात यह है कि नाई, नाई से बाल कटाई के पैसे नहीं लेता, तो क्या एक जेबकट को दूसरे जेबकतरे का जेब काटना चाहिए ? एक धंधेवालों में जो नैतिकता होती है, उसका पालन तुझसे हुआ या नहीं, यह सोचना तेरा काम है ।

मैं तो कृतार्थ हूँ कि तूने मेरा जीवन सार्थक कर दिया । मैंने कभी लिखा था कि आदमी कचहरी जाने वाला जानवर है । आज कहता हूँ : आदमी वह जानवर है जिसका जेब कटता है ।

मगर यार, इतने लोगों में तूने मुझे कैसे छाँट लिया ? मैं बार-बार अपनी जैकेट के उस जेब को टटोलता था, जिसमें नोट रखे थे । बात यह है कि मैं टुच्चा आदमी हूँ । लोग तो हजारों रुपये जेब में रखे रहते हैं और ध्यान नहीं देते पर मैं सौ-पचास रुपये लेकर चलता हूँ, तो भी टटोलता रहता हूँ । तूने ताड़ लिया होगा कि मैं ओछा आदमी हूँ, जिसे रुपये लेकर चलने का अभ्यास नहीं है । या तूने मुझे कोई मालदार आदमी समझ लिया होगा । इधर कुछ मोटा हो गया हूँ । जैकेट पहन लेता हूँ, तो किराने का व्यापारी लगता हूँ । शरीर ने धोखा दे दिया । पिछले साल मेरे पास दो तगड़े कसरती जवान आए । बोले, 'हमारी व्यायामशाला का वार्षिकोत्सव है । उसमें आप प्रमुख अतिथि हों, ऐसी हमारी प्रार्थना है ।' मैं बड़े पशोपेश में पड़ा । इन लोगों ने मुझे क्या समझ लिया है ? लेखक और व्यायामशाला ? मैं अगर मरियल लेखक होता तो क्या ये मुझे मुख्य अतिथि बनाते ? मैं कुरते की आस्तीन चढ़ाकर जब निकला हूँ, तब लगता है, उस्ताद शागिर्दों को रियाज कराके नहा-धो कर बादाम खरीदने निकले हैं । मैंने उनसे कहा, ''वीरों, यह गौरव दारासिंह या चंदगीराम को दो । मैं बहुत तुच्छ हूँ ।'' वे नहीं माने और मुझे जाना पड़ा । इस शरीर ने मेरी क्या-क्या गत नहीं कराई । व्यायामशाला में भिजवाया और जेब कटवाया ।

दोस्त, मैं तेरी बुद्धि की दाद देता हूँ । तूने मुझे समझ लिया । तू सेठ पर नहीं रीझा । तू जानता था कि सेठ के पास जाएगा तो वह तेरी ही जेब काट लेगा । हम लेखक लोग मनुष्य के मन और चरित्र का अध्ययन करते हैं, पर तूने जैसा अध्ययन मेरा कर लिया वैसा मैं किसी पात्र का नहीं कर सका । असल में लेखक तुझे होना चाहिए और मुझे जेबकतरा । न जाने कब से तू मेरे पीछे पड़ा था । तुझे याद होगा, मैं कंडक्टर और एक यात्री के बीच का झगड़ा निपटा रहा था । तभी तूने समझ लिया होगा कि मेरी प्रकृति ऐसी है कि दूसरों के मामले में कूद पड़ता हूँ । तूने इसी दाँव से मुझे मारा । मुझे अब विश्वास हो गया कि दूसरे की मदद करना बड़ी आदत है । जिसे इसकी लत पड़ जाती है, उसका जेब कटता है । तुझे तो याद होगा कि तूने डिब्बे के उस कोने में खड़े होकर मुझे बुलाया था । मैंने देखा, तेरी आँखें लाल थीं । तू पागल जैसा लग रहा था । तूने कहा था, ''इदर आओ, इदर आओ, बर्थ नहीं मिलता, सीट नहीं मिलता-हम परदेशी आदमी हैं ।'' तेरा यह दाँव चला नहीं । तू मुझे

संभाषणीय

किसी अन्य विषय पर कही गई बातें, संवाद, वक्तव्य, भाषण के मुद्दों को पुनः प्रस्तुत करो ।

अलग ले जा कर लूटना चाहता था । पर पगले, उसमें छीना-झपटी होती । हो सकता था, तू गिरफ्तार हो जाता । मैंने यह खतरा देख लिया था । इसीलिए मैं सीट से उठा नहीं और कहा, ''कंडक्टर से बात करो ।'' तब तू मेरे पास आ गया और अपने हाथ मेरे कंधों पर रख दिए । तूने मेरी आँखों में भरपूर देखा । मैंने तेरी आँखों में देखा । मुझे लगा ही नहीं कि तू जेबकतरा है । अगर मैं समझ जाता कि तू जेबकट है तो तुझे गले लगा लेता । मैं समझा, तू तो पागल है । लिहाजा मैं आत्मरक्षा के लिए तैयार हो गया । तय किया कि तूने गड़बड़ की तो मैं तुझे मारूँगा- एक घूँसा नाक पर, एक जबड़े पर और लात पेट पर । तू बड़ा ऊँचा कलाकार है । तूने मेरा ध्यान जेब से किस चतुराई से हटा दिया । वाह !

इसी क्षण तेरा साथी मेरी बायीं तरफ से आया । उसने मेरे कान के पास मुँह लगाकर कहा, ''ये अपनी भाषा नहीं समझता ।'' और उसने मेरी जेब से वह लिफाफा निकाल लिया जिसमें नोट रखे थे । प्यारे, मैं न घड़ी बाँधता, न बटुआ रखता; कार्य अनंत हैं । बार-बार घड़ी क्या देखना । मैं लेखक हूँ । जिस प्रकाशन प्रतिष्ठान के रुपये होते हैं, उसी के लिफाफे में मैं रख लेता हूँ । कभी भी इस प्रतिष्ठान का पैसा उस प्रतिष्ठान के लिफाफे में नहीं रखता । आदमी को लिफाफे के बारे में बहुत सावधान होना चाहिए । लिफाफा दुरुस्त है तो सब ठीक है । फिर पूँजीवाद के अंतर्विरोध को मैं जानता हूँ । एक प्रकाशक का पैसा दूसरे के लिफाफे में रख दूँ तो हो सकता है, लिफाफा रुपयों को लील जाए ।

दोस्त, यह सब घटना मैंने इटारसी के बाद जोड़ी । इटारसी तक मुझे पता नहीं था कि मेरा पैसा निकल गया । इटारसी में मैंने टटोला तो पाया, लिफाफा गायब है । तब मुझे समझ आया कि तू जेबकट था । दो स्टेशन मैंने दुख मनाया । फिर सोचा, 'पैसे भी खोए और दुख भी भोगूँ । मैं कैसा बेवकूफ हूँ । मैं चैन से सो गया ।'

तू यह सब पढ़कर शायद दुखी होगा । नहीं, दुखी होने की जरूरत नहीं, भाई । मैं भी जेब काटने में उस्ताद हूँ । हाँ, तरीका दूसरा है । तूने मेरा जेब काटा तो मैंने एक स्वामी का जेब काट लिया । एक जयंती पर भाषण देकर मैंने कुछ ज्यादा ही रुपये कमा लिया । तू अपने मन से ग्लानि को निकाल दे । तूने मेरा उपकार ही किया है । मेरा जेब कट गया है, यह जानकर मेरे दोस्तों ने मेरे लिए रुपये का इंतजाम कर दिए । तू १७५ रुपये ले गया था न । मैंने ५०० रुपये कमा लिए । २०० रुपये तो उन स्वामी का जेब काटने से मिले । ३०० रुपये दो दोस्तों ने मिलकर दे दिए । अब तू हिसाब कर । तेरे हाथ मेरे १७५ रुपये लगे मेरे १७५ रुपये गए, पर ५०० मिले । यानी इस पूरे मामले में मैं ३२५ रुपये के फायदे में

पठनीय

यात्रा करते समय बस स्थानक, रेल स्थानक पर लगाई गई सावधान रहने संबंधी सूचनाएँ पढ़ो ।

श्रवणीय

'ग्राहक संरक्षण दिवस' की जानकारी सुनो और सुनाओ ।

रहा । अब बता–तू बड़ा जेबकट है या मैं हूँ ?

दोस्त, क्या–क्या योजनाएँ बनाई थीं ! मित्रों ने कहा, ''अखबार में विज्ञप्ति दे देते हैं कि परसाई जी का जेब कट गया है, इसलिए उनका हर मित्र उन्हें एक रुपया दे ।'' मैंने इसे नामंजूर कर दिया ।

कहा, 'यारों, मुझे जिंदा रहने दो । अगर रुपये नहीं आए तो लगेगा मैं इस भ्रम पर जिंदा था कि मेरे दोस्त हैं । भरम टूटने से आदमी मर जाता है ।'

तब मित्रों ने कहा, ''अच्छा, तो फिर तुम्हारी फोटो छापकर उसके नीचे लिख दें–इस आदमी का जेब कट गया है । यह जिस किसी को मिले, इसे एक रुपया दे दे ।''

यह योजना भी मुझे पसंद नहीं आई । तब मित्रों ने कहा, ''अच्छा, गुमशुदा की तलाश शीर्षक के नीचे छपवाते हैं–प्रिय परसाई, तुम सिर्फ पौने दो सौ रुपयों के कारण कहीं छिप गए । लोग तो करोड़ों रुपयों की कालिख से पुता चेहरा नहीं छिपाते । तुम जहाँ कहीं भी हो, चले आओ । पौने दो सौ रुपयों का प्रबंध तुम्हारे दोस्त कर देंगे ।''

मेरे प्यारे जेबकट दोस्त, जेब काटने के मामले में मैं तेरा चाचा होता हूँ । इसी जेबकट का उपयोग करता तो हजारों कमा सकता था ।

भोपाल में मेरे अजीज दोस्त रहते हैं । वहीं जेब कटने से उनका भी इम्तहान लगे हाथ हो गया ।

प्यारे, आगे जब तू मेरा जेब काटे तो बताकर काटना । हम मिलकर ऐसी योजना बनाएँगे कि दोनों मालदार हो जाएँ ।

आशा है, तू मेरे दम पर अभी तो सुखी होगा ही ।

शुभकामनाओं सहित,
तेरा प्रिय मित्र

—— ० ——

लेखनीय

हिंदी भाषा में लिखी विभिन्न प्रकार की सामग्री अंतरजाल से पढ़ो । उससे प्राप्त सूचनाएँ, सर्वेक्षण, टिप्पणी को संकलित करके संपादित लेख बनाओ ।

शब्द वाटिका

आत्मग्लानि = पश्चाताप
सार्थक = अर्थवाला, उद्देश्यवाला
टुच्चा = ओछा
मरियल = बेदम, कमजोर
लिहाजा = इसलिए, अतः

मुहावरे

पशोपेश में पड़ना = असमंजस में पड़ना
लील जाना = निगल जाना
चैन से सोना = निश्चिंत रहना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) कारण लिखो :

१. जेबकतरे को लेखक की जेब नहीं काटनी चाहिए ।

२. जेबकतरे ने लेखक को मालदार समझ लिया ।

(२) संक्षेप में उत्तर लिखो :

१. जेब कटने पर भी लेखक फायदे में कैसे रहा ?

२. जेब कटने पर लेखक के मित्रों ने कौन–सी योजनाएँ बनाईं ?

(३) लिखो :

१. लेखक इनका अध्ययन करते हैं – --------

२. पाठ में आए शहरों के नाम – --------

३. अपनी आत्मरक्षा के लिए लेखक द्‌वारा की गई तैयारी – --------

(४) ऐसे प्रश्न तैयार करो जिनके उत्तरों में निम्न शब्द हों :

लिफाफा, जयंती, दोस्त, अंतर्विरोध

(५) शब्दकोश से निम्न शब्दों के अर्थ खोजकर लिखो एवं मूल शब्दों का अपने वाक्य में प्रयोग करो :

उपकार, विधाता, आत्मग्लानि, कसरती, प्रतिष्ठान, गुमशुदा

(६) पाठ में प्रयुक्त व्यायामशाला से संबंधित शब्द लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो पर्यटन/यात्रा करते समय आवश्यक सावधानियाँ बरतनी चाहिए ।

भाषा बिंदु पाठ्यपुस्तक में आए हुए दस–दस संधि एवं सामासिक शब्द ढूँढ़कर उनकी सूची बनाओ । उनके सामने उनके प्रकार लिखो ।

उपयोजित लेखन 'अनुशासित यातायात सुरक्षित यात्रा' इस विषय पर निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन 'सड़क सुरक्षा सप्ताह' के लिए आवश्यक घोषवाक्यों के बैनर बनाओ और विद्‌यालय की दीवारों पर लगाओ ।

MRL7PG